Research Paper

E-ISSN NO : 2455-295X | IMPACT FACTOR VALUE : 5.983
VOLUME : 11 | ISSUE : 1 | SPECIAL ISSUE JANUARY-2025

ग्लोबल साउथ में भारत की बढ़ती भागीदारी से अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

राजेन्द्र कुमार असिस्टेंट प्रोफेसर (राजनीति विज्ञान), राजकीय महाविद्यालय, भट्टू कलां, हरियाणा.

ABSTRACT:

दक्षिणी गोलार्द्ध क्षेत्र के देश पृथ्वी के दक्षिणी भाग में स्थित हैं जो दक्षिणी ध्रुव के क्षेत्र से लेकर भूमध्य रेखा तक विस्तृत रूप में फेला हुआ हैं। इसमें दक्षिणी अमेरिकी महाद्वीप, अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया एशिया और अंटार्कटिका महाद्वीप शामिल हैं। भारत स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय से लेकर अब तक विकासशील देशों के साथ मजबूत सम्बन्धो का पक्षधर रहा है। भारत की गुटनिरपेक्ष नीति और दक्षिण-दक्षिण सहयोग को इसी परिप्रेक्ष्य में देखा जाना चाहिए। सोवियत संघ के विघटन के उपरान्त (1991) भारत की विदेश नीति में आये बदलावों के पीछे उसके आर्थिक हितों का संवर्द्धन करना ही शामिल था। गत तीन दशकों में भारत ने ग्लोबल साउथ के देशों के साथ अपने आर्थिक रिश्तों को नई दिशा दी हैं। भारत के व्यापारिक सम्बन्धों में वृद्धि हो रही है, जिससे अर्थव्यवस्था को नई गति मिली है। भारत का ग्लोबल साउथ के देशों के साथ राजनीतिक, सुरक्षात्मक सहयोग सांस्कृतिक और शिक्षा का आदान-प्रदान और पर्यावरणीय मुद्दों पर सहयोग बढ़ा हैं। भारत की बढ़ती आर्थिक कूटनीति ने उसकी राजनीतिक कूटनीति एवं सामरिक कूटनीति को मजबूती प्रदान की है। वर्तमान में दो गुटो में बंटी दूनिया में वैश्विक शान्ति और सामूहिक हितों की रक्षार्थ बेहद आवश्यक हैं।

KEYWORDS:

दक्षिण-दक्षिण सहयोग, आर्थिक कूटनीति, राजनीतिक कूटनीति, सामरिक कूटनीति, वैश्विक शांति, दक्षिणी गोलार्द्ध।

परिचय (INTRODUCTION):-

उत्तरी गोलार्द्ध क्षेत्र के देशों को संतुलित करने और दक्षिण गोलार्द्ध के देशों के साथ अपने सम्बन्धो को मजबूती देना भारत की नीति का शुरू से ही भाग रहा हैं। भारत ने स्वतन्त्रता प्राप्ति (1947) से अपनी विदश नीति में उत्तर-दक्षिण संवाद पर जोर दिया। लम्बे समय तक उत्तर-दक्षिण सहयोग एक सीमा से आगे नही बढ़ पाया। भारत ने अब दक्षिण-दक्षिण सहयोग को मजबूती देने का निर्णय लिया। भारत की पिछले तीन दशकों की विदेश नीति शक्ति संतुलन, दक्षिणी एशिया में स्थिरता के साथ आसियान क्षेत्र में अपने हितों के विस्तार पर केन्द्रित रही हैं। ग्लोबल साउथ में तीसरी दूनिया के विकासशील राष्ट्र शामिल हैं जिनका पहली दूनिया में शामिल विकसित देशों और दूसरी दूनिया के साम्यवादी देशों के साथ विचारधारा और आर्थिक हितों को लेकर टकराव देखा जाता रहा है। ग्लोबल साउथ में ज्यादातर एशिया, अफ्रीका और दक्षिणी अमेरिका माहद्वीपों के देश आते हैं। भारत ने तीसरी दूनिया के राष्ट्रों को शुरू में शीतयुद्ध की चपेट से दूर रखा। भारत ने उपनिवेशवाद, रंगभेद और शोषण के मुद्दों पर विरोध हेतु ग्लोबल साउथ के देशों का साथ दिया। भारत ने तीसरी दूनिया के देशों के साथ मिलकर नई आर्थिक विश्व व्यवस्था की मांग की। विकसित राष्ट्रों से सौदेबाजी और परमाणु निरस्त्रीकरण पर भारत की भूमिका बहुत सशक्त रही हैं।[1]

ग्लोबल नॉर्थ के देश आर्थिक दृष्टि से अमीर और विकसित श्रेणी में आते हैं। ग्लोबल साउथ के देश अपनी बड़ी आबादी, समृद्ध संस्कृति और साथ ही प्राकृतिक संसाधनो की भरपूरता के लिए विशेष पहचान रखते है। इन देशों में वैश्विक समस्याओं गरीबी, आर्थिक असमानता और पर्यावरणीय समस्याओं को लेकर व्यापक सहमति दिखती हैं। भारत विश्व के कम आय वाले विकासशील देशों को साथ लाकर उनके विकास को नई गति देने के लिए प्रयासरत है। वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ का तीसरा शिखर सम्मेलन 17 अगस्त, 2024 को वर्चुअल प्रारूप में भारत की मेजबानी में सम्पन्न हुआ। इसकी थीम 'एक सतत् भविष्य के लिए सशक्त वैश्विक दक्षिण' थी। इसमें 123 देशों के 173 प्रतिनिधि शामिल हुए। इस सम्मेलेन का उद्घाटन माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के द्वारा किया गया। यह पहल प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास' के दृष्टिकोण से प्रेरित होने के साथ-साथ भारत के 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के दर्शन पर आधारित हैं।[2]

ग्लोबल साउथ के देशां में परस्पर सहयोग को प्रभावित करने वाले मुद्दे:-

ग्लोबल साउथ में विश्व के तीसरी दूनिया के देश शामिल हैं। इन देशों को अनेक मुद्दे विकास सम्बन्धी पहलुओं के लिए परस्पर सहयोग के लिए प्रभावित कर रहे हैं। गरीबी और आर्थिक असमानता इन देशों के तेजी से आर्थिक विकास में बड़ी रूकावट है। राजनीतिक अस्थिरता के कारण विदेशी निवेश के अनुकूल वातावरण का ना होना। ग्लोबल साउथ के देशों में विदेशी निवेश की कमी के कारण सड़कां, बन्दरगाहां और बिजली जैसी आधारभूत सुविधाओं में अपेक्षित सुधार नही हो पाया हैं। विकासशील देशों में जलवायु परिवर्तन के कारण पर्यावरणीय चुनौतियां बढ़ रही हैं। साथ ही तकनीकी रूप में दक्ष मानव पूंजी ने ग्लोबल साउथ के लिए चुनौतियों को बढ़ा दिया हैं।

ग्लोबल साउथ में भारत की बढ़ती पैठ के मार्ग में चुनौतियां:-

भारत की आजादी के 75 वर्षों की भारत की विदेश नीति में विकासशील देशों के साथ सहयोग एवं मैत्रीपूर्ण सम्बन्धो का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा हैं। ग्लोबल साउथ के साथ भारत के मजबूत रिश्तों के मार्ग में निम्न चुनौतियां विद्यमान हैं:

(i) एकीकृत दृष्टिकोण का अभाव:- द्वितीय विश्व युद्ध के बाद शीत युद्ध, भारत की गुटनिरपेक्षता की नीति और व्यापार एवं विकास के मुद्दों पर भारत और ग्लोबल साउथ के बीच एकीकृत दृष्टिकोण के अभाव ने कई प्रकार की चुनौतियां पेश की।

(ii) चीन का बढ़ता प्रभाव:- 21 वीं शताब्दी में चीन का आर्थिक एवं सैनिक उभार होने से उनका ग्लोबल साउथ में तेजी से प्रभाव बढ़ा है। चीन अपनी बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव **(BRI)** परियोजना के जरिये ग्लोबल साउथ में प्रभाव बढ़ा रहा है। इससे चीन की अर्थव्यवस्था तेजी से आगे बढ़ेगी।

(iii) उत्तरी गोलार्द्ध के देशों का वर्चस्व:- अमेरिकी प्रभुत्व का अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार एवं वित्तीय संस्थाओं पर प्रभाव सीधे तौर पर देखा जा सकता है। उत्तर के अमीर राष्ट्र सैन्य, आर्थिक, औद्योगिक क्षमताओं के मामले में आत्मनिर्भर होने से अपनी राजनीतिक शक्ति का प्रभाव छोड़ने की स्थिति में रहते हैं। उत्तर के अमीर विकसित राष्ट्र अपने हितों के लिए ग्लोबल साउथ के हितों के विरूद्ध जाने में कोई दिक्कत नहीं मानते हैं। भारत का स्पष्ट मानना है कि भूमण्डलीकरण को सर्वसमावेशी होना चाहिए और केवल विकसित देशों के लाभ के लिए संचालित नहीं होना चाहिए।[3]

(iv) संसाधनों तक पहुंच का अभाव:- ग्लोबल साउथ के देशों के पास तकनीकी दक्षता के अभाव में संसाधनो तक पहुंच अपर्याप्त है। साथ ही साथ स्वच्छ जल, स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में स्थिति संतोषजनक नहीं हैं। प्रौद्योगिकी और वित्तीय पूंजी की अपर्याप्तता के चलते गरीबी यथावत बनी हुई है।

(v) कोरोना महामारी का प्रभाव:- कोविड-19 महामारी का सभी क्षेत्रो में वैश्विक प्रभाव देखा जा सकता हैं। इसने सामाजिक ताने बाने को तहस नहस कर दिया। साथ ही न केवल विकासशील बल्कि विकसित देशों की आर्थिक क्षमता और स्वास्थ्य सुविधाओं को हिला कर रख दिया। वैश्वीकरण को सबसे बड़ी चोट पहुंचाई और राष्ट्रवादी नीतियों पर चलने के लिए देशों को विवश कर डाला। आज भी कई देशों की अर्थव्यवस्थाओं पर कोविड-19 का

दुष्प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है।

(vi) समसामयिक वैश्विक तनावः- वर्तमान में रूस-यूक्रेन युद्ध और इजरायल-हमास युद्ध के कारण पूरी दूनिया दो खेम्मां में बंट चुकी है। एक और रूस के साथ चीन, ईरान, उत्तरी कोरिया है तो दूसरी और अमेरिका और नाटो देश हैं। इस प्रकार के तनाव से खाद्य, ऊर्जा और वित्त का निर्बाध प्रवाह बाधित हुआ हैं।

ग्लोबल साउथ के देशों के साथ भारत की बढ़ती पैठ का अर्थव्यवस्था पर प्रभावः-

वर्तमान में भारत पांचवी बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश है। भारत के पास स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त शीत युद्ध के समय गुटनिरपेक्ष आन्दोलन तथा गुरप-77 में अग्रणी भूमिका का निर्वाह करने का सफल अनुभव मौजूद है। वर्तमान में भारत ग्लोबल साउथ के देशों के सामूहिक हितों का प्रतिनिधित्व करने में सक्षम हैं। वर्ष 2023 में भारत नई दिल्ली में जी-20 के 18 वें शिखर सम्मेलन का सफल आयोजन कर चुका हैं। भारत ग्लोबल साउथ के देशों के साथ सतत् विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने को लेकर निरन्तर प्रयासरत है। भारत इन देशों के साथ अपने आर्थिक सम्बन्धो को बढ़ावा दे रहा हैं। समावेशी विकास के साथ ही पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा दिया जा रहा हैं। भारत के ग्लोबल साउथ के देशों के साथ प्रगाढ़ सम्बन्धो को निम्न रूपों में देखा जा सकता हैं**:**

(i) भारत और ग्लोबल साउथ में बढ़ता कूटनीतिक विस्तारः- भारत निरन्तर दक्षिणी गोलाई के देशों के साथ अपने ऐतिहासिक, आर्थिक और सामरिक सम्बन्धो को मजबूती दे रहा है। विशेषकर अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया और दक्षिणी अमेरिकी महाद्वीप के देश इस श्रेणी में शामिल हैं। नई दिल्ली में 9-10 सितम्बर, 2023 को हुए जी-20 के शिखर सम्मेलन में अफ्रीकी एकता संघ को आर्थिक ब्लॉक के स्थायी सदस्य के रूप में शामिल करवाने में भारत सफल हुआ।[4] 'भारत अफ्रीका शिखर सम्मेलन' की पहल को इसी रूप में देखा जा सकता है। भारत के ग्लोबल साउथ के देशों के साथ मजबूत रिश्तों से सागर (SAGAR) जैसी पहल के उद्देश्यों को पूरा करने में मदद मिलेगी।

(ii) भारत के ग्लोबल साउथ के साथ आर्थिक सम्बन्धो में वृद्धिः- भारत के दक्षिणी गोलार्द्ध के देशों के साथ व्यापारिक सम्बन्ध मजबूत हुए है। भारत की उत्पाद सेवाए और निवेश के क्षेत्र में निरन्तर वृद्धि हुई है। कृषि, तकनीकी और औद्योगिक सहयोग का दायरा बढ़ रहा है। भारत की बड़ी कम्पनियां टाटा, महिद्रा और रिलायंस का ग्लोबल साउथ के देशों में निवेश बढ़ने से भारत के साथ इन देशो के आर्थिक रिश्ते मजबूत हुए है। साथ ही साथ भारत की अर्थव्यवस्था में मजबूती आई हैं। यूएनसीटीएडी (UNCTAD) के अनुसार दक्षिण-दक्षिण व्यापार पिछले कुछ वर्षों में तेजी से बढ़ा है। यह 2021 में 5.3 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंच गया हैं। विकासशील देशों के बीच व्यापार की वर्तमान में मात्रा विकासशील और विकसित देशों के बीच व्यापार की तुलना में अधिक है।[5]

(iii) भारत और ग्लोबल साउथ में राजनीतिक और सुरक्षात्मक सहयोग को बढ़ावाः- भारत और ग्लोबल साउथ के देशों में हितों की एकरूपता के कारण जहां आर्थिक सम्बन्धो में प्रगाढ़ता आई हैं। इसी के साथ भारत का अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के साथ संयुक्त सैन्य अभ्यास की शुरूवात और आतंकवाद समुद्री सुरक्षा और साइबर सुरक्षा के मुद्दों पर सहयोग बढ़ा हैं। भारत को वैश्विक दक्षिण के एक आदर्श वाहक की अपनी भूमिका को संपुष्ट बनाए रखते हुए भारत को एक न्यायसंगत और निष्पक्ष शक्ति भी बने रहना होगा।[6]

(iv) संस्कृति और शिक्षा के क्षेत्र में सहयोग में बढ़ोतरीः- भारत का दक्षिणी गोलार्द्ध के देशों के साथ सांस्कृतिक सहयोग निरन्तर घनिष्ठ हुआ हैं। आज योग, आयुर्वेद और बॉलीवुड ने विश्व के हर कोने तक अपनी उपस्थिति दर्ज करा ली हैं। भारत का ग्लोबल साउथ के देशों के साथ शिक्षा के क्षेत्र में सहयोग बढ़ रहा हैं। अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के देशो में भारतीय छात्रों की रूचि बढ़ी हैं।

(v) दक्षिणी गोलार्द्ध के देशों के साथ सहयोगः- भारत का सहयोग ग्लोबल साउथ के देशों के साथ निरन्तर बढ़ रहा हैं। भारत द्वारा कृषि, बुनियादी ढ़ाचा निर्माण, जल संसाधन, स्वास्थ्य और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में विकासशील देशों के साथ मिलकर कार्य किया जा रहा हैं। भारत ने कोविड-19 महामारी के समय 'वैक्सीन मैत्री मानवीय अभियान' के तहत 96 देशों में लगभग 163 मिलियन खुराक वितरित की।

(vi) भारत और ग्लोबल साउथ के देशों के बीच पर्यावरणीय मुद्दों पर व्यापक सहमतिः- भारत का ग्लोबल साउथ के देशों के साथ जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण के क्षेत्र में सहयोग बढ़ा है। भारत ने 'पेरिस जलवायु सम्मेलन' के वैश्विक लक्ष्यों के निर्धारण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। विकसित और विकासशील देशों में जलवायु परिवर्तन को लेकर मतभेद देखा गया कि जलवायु परिवर्तन के उपायों में निराकरण अथवा मिटीगेशन की प्रक्रिया या अनुकूलन अथवा एॅडाप्टेशन की प्रक्रिया को प्राथमिकता प्रदान की जाये।[7] वैश्विक कार्बन उत्सर्जन में ग्लोबल साउथ की तुलना में ग्लोबल नॉर्थ के देशों (विकसित या अमीर राष्ट्रों) का योगदान अधिक है। इसके बावजूद विकसित देश 'हरित ऊर्जा के पर्याप्त वित्तपोषण' में सहयोग नही कर रहे हैं। भारत जलवायु परिवर्तन एवं पर्यावरणीय मुद्दों को लेकर ग्लोबल साउथ के देशों का प्रबल समर्थक रहा हैं। भारत भी एक विकासशील देश हैं, जिसने वर्ष 2047 तक विकसित भारत बनने का लक्ष्य निर्धारित किया हैं।

भारत और ग्लोबल साउथ के देशों के बीच समावेशी विकास और टिकाऊ भविष्य हेतु सहयोग की संभावनाएं:-

वैश्विक संदर्भ मे कोविड-19 महामारी के बाद से उग्र-राष्ट्रवाद की प्रवृत्ति बढ़ी हैं। रूस-यूक्रेन युद्ध (2022) और इजरायल और हमास युद्ध (2023) के बाद से विश्व दो खेम्मों में बंट चुका हैं। अमेरिकी नेतृत्व में नाटो का रूस के साथ टकराव जारी है। भारत ही एकमात्र राष्ट्र है जो दोनों पक्षों के साथ संतुलित आधार पर मैत्रीपूर्ण सम्बन्धो को मजबूती दे रहा हैं। हांलाकि अमेरिका का रूस से टकराव बढ़ने की स्थिति में भारत को दोनों पक्षों को साधना आसान नहीं होगा। पिछले एक दशक में भारत अपने राष्ट्रीय हितों के मद्देनजर 'भारत प्रथम नीति' को प्राथमिकता के साथ अपना रहा है। भारत विकसित देशों (उत्तरी गोलार्द्ध) के साथ-साथ विकासशील देशों (दक्षिणी गोलार्द्ध) के साथ अपने सम्बन्धो को नई गति दे रहा हैं।

(i) राष्ट्रवाद और अन्तर्राष्ट्रवाद के बीच बेहतर संतुलन स्थापित करने की आवश्यकताः- भारत और ग्लोबल साउथ के देशों के बीच घनिष्ठ एंव मैत्रीपूर्ण सम्बन्धो के लिए बेहद आवश्यक है कि वैश्विक हितों के मद्देनजर राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय हितों में उचित सांमजस्य बैठाये। भारत की 'वसुधैव कुटुम्बकम' की नीति उसके वैश्विक हितों के रक्षण एवं संर्वद्धन को मजबूत आधार प्रदान करती है। अब तो भारत की विदेश नीति में आदर्शवादिता और यथार्थवादिता का अनुपम एंव सुन्दर समन्वय दिखाई देता हैं।

(ii) सहयोग के क्षेत्रों की तलाश करनाः- भारत और ग्लोबल साउथ के देशों को समावेशी विकास और वैश्विक निष्पक्षता हेतु सहयोग के क्षेत्रों की तलाश करनी होगी। हितों की एकरूपता इनके बीच सहयोग का आधार बनेगी। इन देशों को गरीबी, स्वास्थ्य सेवाएं, शिक्षा का आधुनिकीकरण और मानव क्षमता निर्माण के क्षेत्रों सुधार कर काबू पाना होगा। समता मूलक विश्व व्यवस्था की स्थापना के लिए दक्षिण-दक्षिण सहयोग बेहद जरूरी हैं।

(iii) ग्लोबल साउथ के देशों के साथ सम्बन्धो को आगे बढ़ानाः- भारत को 'विकसित भारत'-2047 के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए विकासशील देशों के विश्वास को पुनः हासिल कर आगे बढ़ना होगा। व्यापार और विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (UNCTAD) की रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2024 में भारत की अर्थव्यवस्था में 6.5 प्रतिशत की वृद्धि का अनुमान लगाया गया हैं।[8] भारत को लेटिन अमेरिकी देशों, अफ्रीका, दक्षिण एवं दक्षिणी-पूर्वी एशिया के देशों के साथ मिलकर ग्लोबल साउथ के हितों को आगे बढ़ाना होगा। इसमें चीन एक बड़ी चुनौती होगा, इसके लिए भारत को विकल्प तलाशना होगा। विश्व बैंक की ताजा रिपोर्ट के अनुसार भारतीय अर्थव्यवस्था में वर्ष 2024-25 में वृद्धि 7 प्रतिशत रहने का अनुमान है।

(iv) G-20 के मंच का लाभ उठानाः- भारत सितम्बर, 2023 मे 18 वें जी-20 शिखर सम्मेलन का आयोजन नई दिल्ली में कर चुका हैं। भारत के प्रयासों से अफ्रीकी राष्ट्रो के संघ जिसमें 55 देश शामिल है, जी-20 में सदस्यता प्राप्त हो चुकी है। भारत को जी-20 शिखर सम्मेलन में कई महत्त्वपूर्ण प्रस्तावों को लेकर सहमति बनाने में सफलता प्राप्त हुई। वर्तमान में भारत विश्व की पांचवी बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश है। एशियाई विकास बैंक के ताजा आंकलन के अनुसार भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व में सबसे तेजी से बढ़ रही अर्थव्यवस्था है। भारतीय अर्थव्यवस्था में अनुमानित वृद्धि 8.2 प्रतिशत रही है। वर्ष 2024-25 के लिए भारतीय अर्थव्यवथा की वृद्धि दर 7.0 प्रतिशत रहने का अनुमान है।[9]

निष्कर्ष (Conclusion):-

भारत के ग्लोबल साउथ के साथ मजबूत होते रिश्तों से भारत की अर्थव्यवस्था मजबूत हुई जिससे भारत एक आर्थिक शक्ति बनकर उभरा है। वर्तमान में पूरी दुनिया भारत की और आशाभरी नजरों से देख रही है। भारत वैश्विक पटल पर कूटनीतिक और सुरक्षात्मक पहलुओं की दृष्टि से प्रभावी भूमिका निभा रहा है। समावेशी विकास की अवधारणा की मजबूती से

भू-राजनीतिक परिदृश्य के साथ वैश्विक पटल पर ग्लोबल साउथ के प्रभाव में निश्चित ही वृद्धि हुई है। आज 20 वीं शताब्दी में गठित आर्थिक एवं राजनीतिक सस्थाएं जैसे विश्व बैंक, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और संयुक्त राष्ट्र संघ वैश्विक हितों की चिन्ता एवं समाधान करने की दृष्टि से अप्रभावी नजर आ रहै। विश्व तीसरे महायुद्ध के मुहाने पर खड़ा है और संयुक्त राष्ट्र मूकदर्शक की भांति नजर आ रहा है। 21 वीं शताब्दी में तीसरी दूनिया के देशों को वैश्विक समावेशी विकास के लिए एकजुटता से आगे बढ़ना होगा। कोविड-19 महामारी और रूस-यूक्रेन युद्ध ने सभी देशों की अर्थव्यवस्थाओं को नकारात्मक रूप में प्रभावित किया हैं। ग्लोबल साउथ को ग्लोबल नॉर्थ के साथ मिलकर वैश्विक चुनौतियों का मुकाबला करना होगा। वैश्विक शान्ति के बिना समावेशी आर्थिक विकास सम्भव नहीं है। वैश्विक हितों की रक्षार्थ 20 वीं शताब्दी में गठित आर्थिक एंव राजनीतिक संस्थाओं में सुधार की तात्कालिक आवश्यकता है। भारत आर्थिक संस्थाओं में सुधार का प्रबल समर्थक है, साथ ही संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता का प्रबल दावेदार है। भारत की दक्षिणी गोलार्द्ध के देशों के साथ बढ़ती भागीदारी उसकी अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान कर रही है।

REFERENCES

1. यादव आर. एस., भारत की विदेश नीति, डॉर्लिंग किड्रस्ले (इंडिया) प्रा.लि., दक्षिणी एशिया में पियर्सन एज्युकेशन के लाइसेंसीं नोएडा, उत्तर प्रदेश, भारत, 2013, पृष्ठ, 423

2. प्रतियोगिता दर्पण, हिन्दी मासिक, अक्टूबर, 2024, नई दिल्ली, पृष्ठ, 31

3. मिश्रा राजेश, भारतीय विदेश नीतिः भूमण्डलीकरण के दौर में, चौथा संस्करण, 2022, ओरियंट ब्लैकस्वॉन प्राईवेट लिमिटेड, हैदराबाद, तेलंगाना, भारत पृष्ठ, 298

4. भार्गव डॉ. अमरजीत, सिविल सर्विसेज क्रॉनिकल, अक्टूबर, 2024, पृष्ठ, 13

5. सिविल सर्विसेज क्रॉनिकल, अक्टूबर, 2024, पृष्ठ, 12

6. जयशंकर सुब्रह्ममयण, परिवर्तनशील विश्व में भारत की रणनीति, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2023, पृष्ठ 219

7. सिंहल डॉ. एस.सी., भारत की विदेश नीति, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन, आगरा, सप्तम संस्करण, 2022, पृष्ठ, 436

8. सिविल सर्विसेज क्रॉनिकल, जून 2024, पृष्ठ 27

9. प्रतियोगिता दर्पण, सितम्बर, 2024 पृष्ठ, 38